Nai Dunia (Indore), 05th February 2022, Page- 02

आइआइटी ने खोजे तीन अणु होगा मानसिक रोग का इलाज

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। बच्चों और बुजुर्गों में होने वाले एक गंभीर न्यूरोलाजिकल विकार का उपचार तीन नए तरह के अणुओं की मदद से हो सकेगा। आइआइटी इंदौर के शोधकर्ताओं ने यह दावा किया है। आइआइटी इंदौर के बायोसाइंस के प्रोफेसर अमित कुमार की शोध टीम ने तीन नए अणुओं की पहचान की है।

नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट अमेरिका द्वारा जारी ढाई लाख अणुओं की सूची में से आइआइटी के शोधकर्ताओं ने इन तीन खास अणुओं की पहचान की है। आइआइटी के शोधकर्ताओं ने कहा है कि इन तीन अणुओं से फ्रैजाइल एक्स एसोसिएटेड सिंड्रोम यानी गतिभंग सिंड्रोम पर काबू पाया जा सकता है। यह दिमाग और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी बीमारी है। इसके चलते बच्चों या बुजुर्गों में सामान्य गतिशीलता यानी चलने, हाथ-पैरों और शरीर को संतुलित करने में परेशानी होती है। इसके उपचार के लिए अब तक दुनिया में कोई दवा उपलब्ध नहीं है। आइआइटी की शोध टीम के अगुवा डा. अमित कुमार के अनुसार वर्तमान में इस बीमारी को मनोरोग और व्यवहार संबंधी समस्या की तरह मानकर ही उपचार किया जा रहा है। इसके रोगियों को चलने के दौरान संतुलन की समस्या से लेकर किसी भी चीज को पकड़ने के दौरान हाथों में कंपकंपी होती है। उनमें भूलने की बीमारी, स्वायत्त शिथिलता, संज्ञानात्मक गिरावट, दौरे और पर्किंसन के लक्षण भी हो सकते हैं। यह विकार दुनियाभर में 4000 पुरुषों में से 1 और 6000-8000 महिलाओं में से 1 को प्रभावित करता है। प्रारंभिक अध्ययनों में ये अणु न्यूरोनल कोशिकाओं में विषाक्तता को कम करते हैं और सामान्य कोशिका के समरूप व्यवहार को बहाल करते हैं। टीम में पीएचडी कर रहे शोधार्थी अरुण कुमार वर्मा, ईशान खान, सुबोध कुमार मिश्रा शामिल थे। शोध को हाल ही में अंतराष्ट्रीय जर्नल स्प्रिंगर के मॉलिक्यूलर न्यूरोबायोलॉजी सेक्शन में प्रकाशित भी किया गया है। चिकत्सकीय उपयोग के लिए आगे बढ़ने के लिए इस सिद्धांत का पशुओं पर प्रयोग कर परीक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

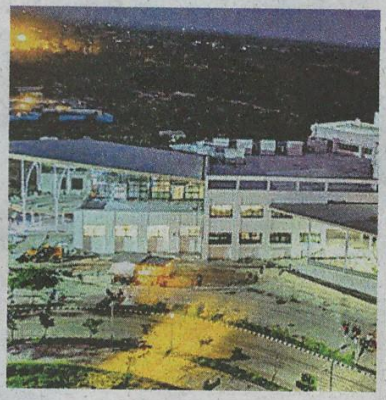

शोध

- **फ्रैजाइल एक्स एसोसिएटेड सिंड्रोम का हो सकेगा बेहतर उपचार**
- **सिद्धांत का पशुओं पर प्रयोग कर परीक्षण किया जाना प्रस्तावित**